 ISSN: 2582-6530

दोरजी लोन्पु की तीन कविताएँ

(1)
मेन

मोनपा समाज में
हर गाँव में
पहुँचने से पहले
कुछ मील
जंगल, तीनाली और चाराली में ही
दर्शन करने मिलेंगे
सदियों से बना ये मेन
दूर दरार से आ रहे
अनजान लोगों को
गाँव-गाँव का रास्ता
दिखाता है
उस मेन में
कुछ सीढ़ी बनी होती है
जिससे मुसाफिर लोग
कुछ चंद आराम फरमा सकें
आज सड़क बन जाने से
अब मेन जंगल में
छुप रहे हैं
अभी बहुत कम लोग
पैदल चल रहे हैं
जिसमें आने वाली
नई पीढ़ी के बच्चे
बहुत जल्द
एक और शब्द खो देंगे।

.....

*मेन-
बौद्ध धर्म में प्रचलित गुम्पा का एक प्रतीक चिह्न

(2)
नेयु

मोनपा समाज में
पुरुष नेयु सुंदर
देखने के लिए
नहीं पहनता
न ही शौक को
पूरा करने के लिए
रीत रही कि
जब पुरुष की शादी हो जाती है
तब वह दायें कान में
नेयु पहन लेता है।

नेयु पहनने से
पता चल जाता है
कि अब वह कुंवारा नहीं है।
रोचक बात यह है कि
वह जिंदगी में
एक ही
पत्नी के साथ रहेंगे।
इसलिए एक ही कानफुली लगाता है।
पूर्वजों की हर चीज
कुछ न कुछ
सीख देती है कि
हमें जिंदगी को
कैसे अनुशासन के साथ
हर पहलू को समझते हुए
आगे बढ़ाना है।

.....

* नेयु : झुमका

(3)

केकोड़

मोनपा समाज में
केकोड़ की पहचान
स्त्रियों को सुंदर दिखना नहीं
न ही सुरूप का प्रतीक
केकोड़ माँ से मिली
शिक्षा होती है।
केकोड़ माँ से मिला
सम्मान और प्रतिष्ठा होती है,
जो हर बेटी के नसीब में नहीं होती।
धागा टूटने पर
माला बिखर जाती है।
फिर भी माँ
उस टूटे हुए केकोड़ को
मजबूत धागे में बांधना सिखाती है,
क्योंकि अच्छी बहू नहीं बनने से
ससुराल टूट जाता है।
इसलिए
माला और धागा को
जिंदगी से जोड़कर
माँ तब तक कहती रहती
जब तक रिश्तों के अहमियत को
समझ नहीं आ जाता
माला बेटियों के बीच पीढ़ी-दर-पीढ़ी
चलने वाली
वो भूमिका होती है
जो जिम्मेदारी का प्रतीक है।
ऐसा कहा जाता है कि
केकोड़ पहनने से
माँ की कमी महसूस नहीं होती
क्योंकि यह माला लाल रंग की होती है।
जो बेटियों के जीवन में
हर वक्त साहस, उत्साह
एवं नवजीवन बनाए रखते हैं।

---

* केकोड़: माला

***

(लेखकीय परिचय : *दोरजी लोन्पु अरुणाचल प्रदेश के मोनपा जनजाति के पहले युवा कवि हैं। इनकी कविता-संग्रह की दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- 'मोन्युल के पेङदाङ में खिले फूल' और हाल ही में प्रकाशित 'रंगहीन दुनिया के वारिस'।*
मोबा: 9436059651, ई-मेल : dorjeelonpu1990@gmail.com)